कार किराए के नाम पर नगर.....

पेज एक का शेष

अधिकारियों की होने की वजह से अपना कमीशन काट कर 80 से 85 फीसदी रकम उन्हें सौंप देती है। शायद यही कारण है कि कुछ अधिकारियों को छोड़कर अन्य को कंपनी ने ड्राइवर भी मुहैया नहीं कराए हैं। यह अधिकारी निगम के ड्राइवरों का इस्तेमाल कर रहे हैं।

सूत्रों के मुताबिक कंपनी से 23 कारें किराए पर लेने का अनुबंध किया गया था लेकिन किराया 27 से अधिक कारों को भुगतान किया जा रहा है। अधिकारियों की लूटपाट इसी तरह चलती रहे इसलिए कंपनी का टेंडर खत्म होने के बावजूद नई निविदा जारी करने के बजाय उसे ही बार बार बढ़ाया जा रहा है।

निगम के नियमानुसार कमिश्नर, ज्वाइंट कमिश्नर, चीफ इंजीनियर और एसई रैंक के अधिकारी ही इस सुविधा के लिए अधिकृत हैं। बावजूद इसके ,

में जेडटीओ, जेडटीओ,एमओएच और एसडीओ जैसे छोटे अधिकारियों को भी किराए की कार मुहैया कराई गई है। यदि मामले की गंभीरता से जांच हो तो कार किराया घोटाले का काला सच सामने आएगा। इस संबंध में निगम कमिश्नर जीतेंद्र दहिया से उनका पक्ष जानने के लिए यह संवाददाता ने तीन बार उनके कार्यालय गया, दो बार तो वह उपलब्ध ही नहीं थे, एक बार मीटिंग चल रही थी तो उनके पीए ने संवाददाता की पर्ची तक अंदर पहुंचाने की जहमत नहीं उठाई, फोन तो उनका कभी उठता ही नहीं है। फिर भी यदि वह चाहें तो उनक पक्ष प्रकाशित करने के लिए मोर्चा हमेशा तत्पर रहेगा।

Paytm

MM

Majdoor Morcha

UPI ID: 8851091460@paytm

8851091460

Scan this QR or send money to 8851091460 from any app. Money will reach in Majdoor Morcha's bank account.

केवल पाठकों के दम पर चलने वाले इस अखबार को सहयोग देकर अपनी आवाज को बुलंद रखें।

मज़दूर मोर्चा- खाता संख्या- 451102010004150

IFSC Code : UBIN0545112

Union Bank of India, Sector-7, Faridabad

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लबगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
6. सुरेन्द्र बघेल-बस अड्डा होडल - 9991742421

अन्य घोषणाओं की तरह ढिंढोरा ही साबित होगी पीएमश्री स्कूल योजना

- बेसिक शिक्षा स्कूलों की हालत तो सुधार नहीं पा रहे, बच्चों को एडवांस कोर्सेज पढ़ाने का दिया जुमला

- बेसिक शिक्षा के छह हजार स्कूल बंद कर चुकी है मोदी सरकार

फरीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) अनपढ़ और अब तक के सबसे भ्रष्ट प्रधानमंत्री होने का आरोप झेल रहे नरेंद्र मोदी ने हाल ही में पीएमश्री यानी प्रधानमंत्री स्कूल ऑफ राइजिंग इंडिया का जुमला दिया है। इसके तहत देश भर में करीब चौदह हजार और हरियाणा में 280 स्कूलों को अपग्रेड किया जाएगा। 2014 में केंद्रीय सत्ता में आने के बाद से नरेंद्र मोदी की भाजपा सरकार बेसिक और उच्च दोनों ही शिक्षा का बजट घटा कर लगभग आधा कर चुकी है। ऐसे में मॉडल स्कूल योजना, संस्कृति स्कूल और आरोह योजना की तरह ही पीएमश्री स्कूलों की घोषणा भी जुमला ही साबित होगी, इसकी प्रबल संभावनाएं हैं।

शिक्षा विभाग के अधिकारियों के मुताबिक पीएमश्री विद्यालयों में बच्चों को रोबोटेक, ड्रोन, कोडिंग, डेटा मैचिंग, डेटा एनालिसिस, डेटा माइनिंग, ब्लॉक चेन मैनेजमेंट, क्रिप्टो, एस्ट्रोनॉमी, रॉकेट साइंस आदि का ज्ञान दिया जाएगा। इसे भाजपा सरकार की नई शिक्षा नीति के तहत किए जाने वाले सुधार बताया जा रहा है।

शिक्षा विभाग पहले से ही शिक्षकों की कमी से जूझ रहा है, ऐसे में इन आधुनिक विषयों का ज्ञान देने के लिए आवश्यक प्रशिक्षित शिक्षक की तैनाती क्या बेसिक शिक्षा विभाग करेगा, यह पहला प्रश्न है। घटते शिक्षा बजट के मद्देनजर नई भर्तियों पर खर्च किया जाना मुश्किल ही लग रहा है। शिक्षा विभाग के अधिकारी कहते हैं कि शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए स्किल यूनिवर्सिटी आदि संस्थाओं से संपर्क किया जाएगा। रही बात स्किल यूनिवर्सिटी की तो भाजपा की यह योजना भी जुमला से ज्यादा शायद ही कुछ हो। इन यूनिवर्सिटी में भी एडवांस कोर्स नहीं बल्कि औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान यानी आईटीआई की तर्ज पर ऐसे कोर्स कराए जाते हैं जिससे प्रशिक्षु कौशल प्राप्त कर रोजगार चला सके।

रॉकेट साइंस, क्रिप्टो, एस्ट्रोनॉमी जैसे अति आधुनिक विषयों के लिए विषय विशेषज्ञों की जरूरत है और इस तरह की शिक्षण संस्थाएं भारत में गिनती की हैं। उनके प्रोफेसरों से इन बेसिक शिक्षा के शिक्षकों को ट्रेनिंग दिलाना क्या मुमकिन होगा यह दूसरा प्रश्न है। तीसरा प्रश्न यह कि अति आधुनिक और जटिल विषयों को समझने के लिए क्या बच्चों की बुद्धि योग्य है। शिक्षा मनोविज्ञान के जानकारों के मुताबिक देश में आम वयस्क और शिक्षित व्यक्ति क्रिप्टो, कोडिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रॉकेट साइंस जैसे विषयों के बारे में अधिक नहीं जानता, ऐसे में बच्चों को यह विषय पढ़ाया जाना उनके कोमल मस्तिष्क को जानकारियों से ओवरलोड करने जैसा होगा, जो उनके स्वस्थ मानसिक विकास के लिए ठीक नहीं होगा।

सरकार प्रत्येक पीएमश्री स्कूल में संसाधन विकसित करने के लिए 50 लाख रुपये खर्च करेगी। यूपी सरकार की विद्यालयों को आधुनिक करने के लिए शुरू की गई कंपोजिट ग्रांट योजना में हुए घोटाले की तरह ही पीएमश्री योजना में भी धन का बंदरबांट किए जाने की संभावनाओं से इनकार नहीं किया जा सकता। वैसे भी चाहे मोदी सरकार हो या खट्टर सरकार योजना का जोर शोर से ढिंढोरा पीट कर जनता को बहकाया जाता है, लेकिन धरातल पर योजना का क्या हाल है इसे लेकर गंभीरता से कोई कार्रवाई नहीं की जाती। दरअसल, जुमलेबाजी में माहिर भाजपा का यह सिद्धांत है कि काम करने की कोई जरूरत नहीं है केवल काम का ढोल पीटा जाए। एक ओर तो शिक्षा बजट घटा कर आधा कर दिया गया, स्कूल से लेकर यूनिवर्सिटी और आईआईटी जैसे संस्थानों तक में स्टाफ की चालीस प्रतिशत तक सीटें खाली पड़ी हैं। दूसरी ओर नए नए नामों की नई नई घोषणाएं करके जनता को बरगलाया जा रहा है। यह सब जुमलेबाजियां आने वाले चुनाव में काम आने वाली होंगी।

मज़दूरों की मासूमियत पर प्यार भी आता है और गुस्सा भी

जाने कितने झूठे वादों के बाद कल, एक और वादे को झुठलाने की प्रक्रिया में, केसी लखानी, रुआंसी सूरत बनाकर, कुर्सी पर बैठकर, लम्बी-लम्बी सांसें लेते हुए बोलना शुरू करता है;

"बेटा, तुमने मेरी बहुत सेवा की है, तुम मेरे अपने बच्चे हो, मैं बहुत ग़रीब हो गया हूं, मेरे पास पैसा नहीं हैं, जूते चप्पल बनाने के लिए कच्चा माल भी नहीं ले पा रहा, अब तुम अपने-अपने घर चले जाओ, 10 अप्रैल को सबका सारा बक़ाया पक्का मिल जाएगा।"

पीएफ, ईएसआईसी, कई महीनों का वेतन, ओवर-टाइम, बोनस कुछ भी ना मिलने पर, "आज बिना चेक लिए मालिक को घर नहीं जाने देंगे", चिल्ला रहे मज़दूर, शांत होकर ज़मीन पर बैठ गए। तब ही, एक मज़दूर, अचानक, उठा और बोलने लगा,

"सर, आप हमारे पेमेंट की बात छोड़िए, आप तो कच्चा माल लाईये, हम काम करना चाहते हैं, जूते-चप्पलों का ढूह लगाना चाहते हैं!!"

लखानी, किसी तरह अपनी ख़ुशी को पेट में दबाते हुए, अपनी लम्बी गाड़ी में बैठ अपने घर निकल गया!!

मज़दूरों की मासूमियत पर प्यार भी आता है और गुस्सा भी!!